The Pride of Mysore
MYSORE SILKS
Mysore may well be proud of being the home of India's finest and daintiest silks. MYSORE SILKS are today's' fashion-leader !
FAS
Mysore Silks
Govt. Silk Weaving Factory, Mysore

भूमिका.

—०❋०—

सर्व सज्जनोंकी सेवामें निवेदन है कि, जोतिषशास्त्र षट् शा[illegible] एक अपूर्व शास्त्र है, शास्त्रके न जाननेवालें अथवा जि[illegible] जोतिषका पूर्णज्ञान न होनेके कारण उनकी बात ठीक न ह[illegible]से लोगोंका विश्वास उठता जाता है कि, जोतिष झूंठ है, भइयो! जोतिष झूंठ नहीं है जोतिष शास्त्रका सूर्य्य इतना तेजवान् है, कि जिसका बर्णन करना कठिन है, जिसकी हजारों प्रचंड किरण हैं उनमें की यह एक छोटीसी " प्रथम किरण " आपके बालकों क हितार्थ प्रकाशित की है. थोडा पढ़ा लिखा बालक भी इस पुस्तकके सहारे जोतिषका अनुभवी हो सक्ता है और इसकी ११ किरण और छपनेको तैयार हैं सो शीघ्र छापकर प्रकाशित की जाँयगी, मैं कोई कवि नहीं हूं दाहोंमें कविता दोष होनेसे सज्जन सुधारकर पढ़ें लेकिन् उसके मर्म व अर्थपर ध्यान देकर मेरे परिश्रमको सुफलकर मुझे कृतार्थ करेंगे ऐसी आशा है.

निवेदक—

आपका कृपाभिलाषी—रामगुलाम पराशर,

श्रीगणेशाय नमः

...थ श्रीज्योतिषचन्द्रिका प्रारंभः ।

दोहा ।

श्रीगणेश सुमिरण करौं, सरस्वतिमातु मनाय ।
गुरुकेचरण बंदि करि, ज्योतिषकिरिण बनाय ॥ १ ॥
श्रीउत्तमचंदसुत कहे, श्रीद्वारकापरशाद ।
तिनको पुत्रजु मैं अहौं, जनमों शमसाबाद ॥ २ ॥
...जला फर्रुखाबाद है, पाराशर द्विजवंश ।
...मजु रामगुलाम है, बरणौं ज्योतिषअंश ॥ ३ ॥
...नइस सौ पनचस कहे, सम्वत मास असाढ़ ।
...मी तिथि गुरुवारको, नखत उत्तराषाढ़ ॥ ४ ॥
... शतक अरु सात कहे, दोहा छंद कवित्त ।
...तिर्विधुकी चंद्रिका, पढ़ै गुनै दै चित्त ॥ ५ ॥
... लग्न मुहूर्त सब, ज्योतिष ग्रंथ जंचाय ॥
...बुद्धि अधिकात है, सूक्षम षट अध्याय ॥ ६ ॥

अथ बालकजन्मको बिचार ।

...जन्मके भेद सब, कहत अहौं समुझाय ।
...जैसे ग्रह परैं, तस फल देउं बताय ॥ ७ ॥
...परै जाही दिशा, सिरहानो तहँ मान ।

लग्नके पल जानवो ।

मीन मेष इकतालिस पलको जानिये ।
वृष अरु कुंभ त्रयोदस मानिये ॥ ४२ ॥
मिथुन मकरके चारि पल, धनै कर्क ब्यालीस ।
वृश्चिक सिंहके जानिये, पैंतालिस पैंतालीस ॥ ४३ ॥
शेषराशि कन्या तुला, होवे पल मैंतीस ।
प्रगट चक्रमें देखिलो, संयुत घटि पैलीस ॥ ४४ ॥

घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
प.	४१	१३	४	४२	४५	३८	३८	४५	४२	[illegible]	१३	४१

अथ लग्न नित्य घटै सो जानवो ।

मीन मेष पल सात घट, आठ कुंभ वृषमानु ।
कन्य मिथुन पल दश घटै, और रुद्रं पहिचानु ॥ ४५ ॥

अथ लग्नको रंग ।

मेष लाल वृष स्वेत है, मिथुन हरी जह मानु ।
कर्क सिंह पांडूरसम, कन्या चित्रित जानु ॥ ४६ ॥
मकर कुंभको श्याम रंग, धन कवरी सबधाम ।
मीन तुला वृश्चिक कही, पिअरी रामगुलाम ॥ ४७ ॥

अथ चन्द्रमाको रंग ।

मेष सिंह वृश्चीक चन्द्रको, लाल वरनतनु जानु ।
वृषै कर्क अरु तुलाको स्वेत रंग पहचानु ॥ ४८ ॥

धने मीन मिथुने कही, पीतवरन तन तेहु।
मकररु कन्या कुंभ को, श्याम रंग कहि देहु ॥ ४९ ॥

अथ राजयोग।

परै बृहस्पति पांचई, दसवें चन्दा जान।
वैष्णव रामगुलाम यह, राजयोग पहिचान ॥ ५० ॥
तन भ्राता अरु पुत्रके, धर्म गेह ग्रह होय।
चौग्रही यह जाहिके, राजतुल्य नर सोय ॥ ५१ ॥
लग्न पांचये सूर्य परि, यथा बृहस्पति होय।
धनपूरन विद्या अधिक, जसीमान नर सोय ॥ ५२ ॥
सुतमंदिरमें गुरु परै, पंडित कवि धनमान।
राजसभा सुख पाइ है, जीतै चतुर सुजान ॥ ५३ ॥
शुक्र लग्नतै तीसरे, जा वालकके होय।
दुइ कन्या सुत तीन कहि, निहचै ताके होय ॥ ५४ ॥
मेष महीसुत कर्क गुरु, शुक्र तुलाके जानु।
पूरन शशि अव देखिये, बादशाह नर मानु ॥ ५५ ॥
भृगु दूजे गुरु सातये, मंगर दसयें होय।
चतुर सुघर वस्तर विभौ बादशाहसम सोय ॥ ५६ ॥
बुध सूरज जो लग्नमें, भौम राहु षट मानु।
वैष्णव रामगुलाम यह, राजयोग पहिचानु ॥ ५७ ॥
जीवलग्न शनि बारहे, बली होय नर सोय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, सुख संपति बहु होय ॥ ५८ ॥

जीवलग्नतै तीसरे, शुक्र आठवे होय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, निहचै राजा सोय ॥ ५९ ॥
वृषके गुरु शशि मिथुनके, मकर महीसुत जानु ।
कन्याके अब कहतु हौं, बुध सूरज पहचानु ॥ ६० ॥
तुला शुक्र सिंहे शनी, जो ऐसे ग्रह होय ।
जीवे बारह वर्ष सो, पृथी जीत नर सोय ॥ ६१ ॥
लग्नजीव शत वर्ष नर, जीवैं निहचै जानु ।
नायक होवे कुटुंबको, राजयोग पहचानु ॥ ६२ ॥
शुक्र भौम धनके कहे, मीन जीव जो होय ।
मेषे शनि बुध तुलाके, शशि धन राजा सोय ॥ ६३ ॥
मीन गुरू बुध बारहे, दशवे राहु वषानु ।
तनु रवि मंगर तीसरे, राजयोग शुभ जानु ॥ ६४ ॥
शशि ग्रहे गुरु तीसरे, कुलदीपक सो होय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, निहचै जानौ सोय ॥ ६५ ॥
शुभग्रहा शुभलग्नके, जो केन्द्रमें होय ।
शुभकारज सबविधि करै, दाता पंडित सोय ॥ ६६ ॥
सौम्यग्रह हो उच्चके, परै केन्द्रमें आय ।
राजा हुइ है वंशको, सो मैं देउ बताय ॥ ६७ ॥
दूजे बरहें लगन अरु, सतयेमें ग्रह होय ।
छत्रयोग यह जानिये, निहचै करके सोय ॥ ६८ ॥
जीवशुक्र हों मीनके, शशिदेखत जो होय ।

नरग्रह देखे चक्र लिखि, राजयोगमें सोय ॥ ६९ ॥
शनि बुध गुरु निजराशिके, वड़ी आर्वल होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, बहु धनमंतो सोय ॥ ७० ॥
मेषे रवि मंगर मकर, दृष्ट बृहस्पति होय।
षट बुध शुक्र देखही, पृथ्वीपति हो सोय ॥ ७१ ॥
कृतिका स्वाति जो रेवती, पुष्य अनुराधा मानु।
जो शुक्र इनके परै, पृथी जीत नरु जानु ॥ ७२ ॥
पूर्वा मूल अरु पुष्यके, स्वाति शुक्र जो होय।
इंदु परै जो लग्नमें, राजयोग कहि सोय ॥ ७३ ॥
उच्च चंद्रमा कर्कको, जो बुधसंयुत होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, राजा जानौ सोय ॥ ७४ ॥
कर्मगेह बुध शुक्र जो, अरु गुरु मंगर होय।
इकठौरे जे ग्रह परै, धनमंतो नर सोय ॥ ७५ ॥
दशवे ग्रह मंगरु परै, संग बृहस्पति होय।
धरनीपाति नर जानिये, अरु धनमंतो सोय ॥ ७६ ॥
कर्मगेह गुरु शुक्र हों, सबल होय जह जानु।
धरनीपाति सुतधनसहित, पंडित अति बलवानु ॥ ७७ ॥
बली होय कोइ ग्रह परै, जो दशवे घर जाय।
सो जीवे शतवर्षलों, निहचै जानौ भाय ॥ ७८ ॥
लग्नको स्वामी केंद्रमें, कै त्रिकोणमें होय।
बली होयके ग्रह परै, नरु जीवै शत सोय ॥ ७९ ॥

शशितै गुरुकी दृष्टमें, नीच शुक्रकी दृष्ट ।
रूपमानगुणशीलनृप, पालनहारो सृष्ट ॥ ८० ॥
सिंह सूर्य शशि कर्कके, गुरुकी दृष्टि जो होय ।
शीलमान धनमान सो, राजयोग है सोय ॥ ८१ ॥
कुंभै शनि अरु शुक्र है, तनग्रह सूरजजानु ।
जलचर अब शशिधाम है, राजयोग पहचानु ॥ ८२ ॥
अभिजितमें नर जन्महीं, राजा कहों बखानि ।
वैष्णव रामगुलाम सो, भागमान सुत जानि ॥ ८३ ॥
सौम्यग्रह नव ग्यारवें, कर्म पापग्रह होय ।
कलशयोग सो गूनिये, राज करै नर सोय ॥ ८४ ॥
मकर सिंह गुरु त्यागिके, परै लग्नमें आय ।
औवल ग्रह कोई परै, निहचै राज कराय ॥ ८५ ॥
तन तै चौथे भवन लों, नौऔ ग्रह परिजाय ।
इन्द्र बाहु तासों कहत, सुख संपति बहुताय ॥ ८६ ॥
उलटे सतयें गेहलौं, सबही ग्रह परिजाय ।
नाग योग सो जानिये, भोगी धनी बताय ॥ ८७ ॥
वीर बड़ो अरु सूरमा, शीलमान हरिभक्त ।
चतुर विवेकी सुघर तन, जाहिर सबरे जक्त ॥ ८८ ॥
सूरज वरहैं ना परैं, और जोगमें होय ।
नरफा जोग जो कहत हैं, ताहीको सब कोय ॥ ८९ ॥
शशिते दूजे भवनमें, कोई ग्रह परिजाय ।

वैष्णव रामगुलाम सो, सुनफा जोग कहाय ॥ ९० ॥
शशिते बरहें भवनमें, जो कोई ग्रह होय।
अनफा जोग वषानिये, निहचैं करिके सोय ॥ ९१ ॥
शशिके दोऊ ओरते, कोऊ ग्रह परिजाय।
जोग दुर्धरा जानिये, पंडित जन चितलाय ॥ ९२ ॥
शशिके तिन तिन भवनलौं, दोउ ओर ग्रह होय।
जोग केमद्रुम जानिये, ताहीको सबकोय ॥ ९३ ॥
अनफामें नरजन्मही, भोगी धनी बताय।
कर्म साहसी ज्ञानबल, चातुर सुघर कहाय ॥ ९४ ॥
सुनफामें नर जन्मही, दाता मंत्री होय।
धनमानी पंडित चतुर, बुद्धिमान सुत सोय ॥ ९५ ॥
दुरधरमें नर जन्मही, सब नृप जाहर होय।
दाता कुटुंबै पालि है, जह जानौ सब कोय ॥ ९६ ॥
केमद्रुम नर जन्मही, राजाके कुल आय।
दालिद्री दुरबुद्धि सो, रोगी सदा बताय ॥ ९७ ॥
चंदा परै जु उच्च को, सौम्य ग्रह सो जुक्त।
परै आइके केन्द्रमें, राजसमाजन भुक्त ॥ ९८ ॥
तुला कर्क धन सिंहके, मकर बृहस्पति होय।
जो इनमें सुत जन्मही, भागवान सो होय ॥ ९९ ॥
तुला मीन धन राशिके, लग्न मध्य शनि होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, शीलमान नर सोय ॥ १०० ॥

नमये पंचयें गेहमें, सौम्यग्रह जो होय।
अरु दशवें चन्द्रा परै, राजा जानौ सोय॥ १०१॥
मकर कुंभ वृष मिथुन अरु, मीन मेषके जानु।
इनहींमें नवग्रह परै, पराक्रमी नर मानु॥ १०२॥
सूरज बुध गुरु शुक्र कहि, राहु राशिमें भुक्त।
पुत्रमान सुत होय नृप, सीलरूपधन जुक्त॥ १०३॥
शुक्र चंद्र मंगल गुरू, भानु शनीचर मानु।
मातु भवनमें जो परै, निहचै राज वषानु॥ १०४॥
क्रूर आठवे भवनमें, बीच सौम्यग्रह देषि।
वैष्णव रामगुलाम कहि, उमरवर्ष सौ लेषि॥ १०५॥
शनि चंदा लग्नै परै, गुरु सूरज त्रैकोन।
मंगरु दशवे लग्नतै नृप काहिये सुषभोन॥ १०६॥
नवयें सूरज सिंहके, भ्रात न जीवै ताहि।
भूप होय सुंदर चतुर, तीरथ वर्त्त कराहि॥ १०७॥
दूजे तीजे पांचयें चौथे, छठे वषानु।
दशयें लौं नौग्रह परै, राजयोग पहचानु॥ १०८॥
लग्न क्रूर धनक्रूर है. सौम्य बारहें जानु।
बुद्धिमान दाता बड़ो, सदा दरिद्री मानु॥ १०९॥
धनके शनि और चंद्रमा, मेषे गुरु जो होय।
शुक्र राहु दशवें भवन, चतुर महानृप सोय॥ ११०॥
सिंहे गुरु कन्या भृगू, मिथुन शनीचर मानु।

बुध मंगल अपने भवन, नायकु नृपति वषानु ॥ १११ ॥
कन्याके शनि चंद्रमा, मकर महीसुत सोय।
सिंह जीव राहु कुंभके, विश्वपाल नर होय ॥ ११२ ॥
शुक्र जीव रवि भौम कहि, मकर कुंभ धन मीन।
वर्ष तीस जब होय नरु, विद्या पढ़ै प्रवीन ॥ ११३ ॥
कर्कलग्नमें गुरु परै, तिसरे शशि बुधयुक्त।
भानु मेषके देखिये, पृथीपाल नर भुक्त ॥ ११४ ॥
बुध गुरु शशि शुक्रु परै, जाय कर्म स्थान।
जोई कारजको करै, सोई सिद्ध परमान ॥ ११५ ॥
सिंहके मंगरु जो परै, राहु मिथुनके भानु।
नारु भुगतै पिताको, निहचै इह जिय जानु ॥ ११६ ॥
अर्क उच्च त्रिकोनमें, कोई जाति नरु होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, निहचै राजा सोय ॥ ११७ ॥
रवि चंदा धन गेहमें, बली शनीचर लग्न।
मकर महीसुत जानिये, महाबाहु नृपमग्न ॥ ११८ ॥
दशये गिरहे लग्नमें, चौथेमें सब होय।
नीचो कुलमें अवतरहि, राजा कहिये सोय ॥ ११९ ॥
लग्नतै नमयें गेहलौं, एक एक ग्रह होय।
महाराज तिह जानिये, निहचै करिके सोय ॥ १२० ॥
केन्द्रमें गुरु देखलो, और देखि मतिमानु।
गजजूथनमें सिंह ज्यों, निहचै करके जानु ॥ १२१ ॥

कर्म शुक्र सहसै हनै, बुध दशदोष त्रषानु ।
लक्षदोष नाशन करै, मूरतिको गुरु मानु ॥ १२२ ॥
मूरतिके गुरु जो परै, कै और केन्द्रमें होय ।
मंगरु दशवे लग्नतै, कुलदीपक है सोय ॥ १२३ ॥
शुक्र बृहस्पति लग्नतै, परै पांचये थान ।
अगम्य विद्यावान सो, वहुवानी धनमान ॥ १२४ ॥

अथ लग्नदृष्टि ।

त्रय दसये नव पांचये, अठये चौथे धाम ।
जन्म सात पूरण कही, वैष्णव रामगुलाम ॥ १२५ ॥
तीसर दशये प्रथमपद, दूजीपद नव पांच ।
चौथी अठई चरन त्रिय, जन्म सात ये जांच ॥ १२६ ॥
जा घर जाकी नजर है, ताको देखो धाम ।
चारि चरनकी दृष्टिको, भेद और परिणाम ॥ १२७ ॥
जह पर पूर्ण दृष्टि है, जौन ग्रहेकी ठाम ।
तहपर ताको जानियो, वैष्णव रामगुलाम ॥ १२८ ॥

इति श्रीज्योतिपचन्द्रिका श्रीवैष्णव रामगुलाम
पराशरकृत प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ उच्चग्रह जानवो।

मेषे रवि वृष चन्द्र कहि, मकर महीसुत जान।
कन्या बुध गुरु कर्कके, शुक्र मीनके मान॥ १॥
राहु केतु हैं मिथुनके, तुला शनीचर जानु।
वैष्णव रामगुलाम ये, उच्चग्रहा पहिचानु॥ २॥

अथ नीचग्रह।

तुलाके रवि वृश्चिकको चन्दा। कर्क महीसुत जानहु मंदा॥
मीने बुध अरु मकर देवगुरु। कन्या शुक्र नीच जानौ फुरु॥
मेष शनीचर नीच बखानौ। राहु केतु धन राशिके जानौ॥
यहविधि नीच ग्रहा यह जानौ। औरहु नीच कहौं ते मानौ॥३॥
द्वादश अष्टम पाप ग्रह, मातु पक्षको कष्ट।
चौथे दश ये तातको, कहियो महा अरिष्ट॥ ४॥
सून होय जो तन भवन, निर्धन निहचै जानु।
कर्म थान जो ग्रह नहीं, दुर दुर जोग प्रमानु॥ ५॥
परै बृहस्पति आठईं, बरहें रविको वास।
निहचै ताको जानिये, दहिनी आंषि विनास॥ ६॥
लग्न चंद्रमा दूसरो, कानी बांई आंषि।
जो सूरज बरहें परै, दोनों कानी साषि॥ ७॥
क्रूर ग्रह जे लग्नमें, और बारहें होय।
सौम्य ग्रह दूजे सते, कुटुंब नाशकर सोय॥ ८॥
चन्द्र षष्ट ये जन्म शनि, मंगर सतये होय।

जाके ऐसे ग्रह परै, पिता न जीवे सोय ॥ ९ ॥
चौथे नवये गेहमें, परै राहु जो आइ ।
निहचै करिके जानिये, भ्रात न जीवे ताइ ॥ १० ॥
राहु परै जो पांचये, औरु न बालक होय ।
वा बालकको जानिये, जिये तो तपसी होय ॥ ११ ॥
सत ये नव यें क्रूर ग्रह, लग्न बारहे क्रूर ।
सौम्य ग्रह दूजे परै, कुंटुब वास कर दूर ॥ १२ ॥
मूरति मंगरु राहु रवि, शनि अरु केतु जो होय ।
शशि षठ अठयें जन्मके, मातु बहुत दुष भोय ॥ १३ ॥
शुक्र आठ ये चन्द्र षट, राहु सातये आय ।
पुत्र जन्म अब कहतु हौ, सात दिवस नहि जाय ॥ १४ ॥
भौम क्षेत्रमें जीव है, जीव क्षेत्रमें भौम ।
द्वादश वर्षसु जीवई, बढ़ती एक न यौम ॥ १५ ॥
राहु चतुर्थे चन्द्र षट, अठये शनीचर धाम ।
दुइ घटिकामें सुत मरै जोपै शिव रक्ष्याम ॥ १६ ॥
निशानाथ अठयें भवन, पाप केन्द्रमें होय ।
राहु चतुर्थे जो परै, वर्ष जिये सुत सोइ ॥ १७ ॥
चन्द्र लग्न देखे नहीं, बुध शुक्र सुत आय ।
शनि मूरति मंगरु सते, तासु पिता घर नाय ॥ १८ ॥
लग्न शनीचर गुरु परै, धन रवि मंगरु होय ।
बालकको जब व्याह होइ, पिता न जीवे सोय ॥ १९ ॥

जन्म दूसरे पांचये, सतये चौथे जानु ।
अठये वरहे राहु रवि, शनि मंगरु जे मानु ॥ २० ॥
धनको हर औ प्रान हर, और महा दुख सेइ ।
इन चारोंके प्रगट गुन, समुझाकर कह देइ ॥ २१ ॥
रविके घर मंगरु परै, मंगर वर रवि जाय ।
अमृत ताहि पिआइये, सो सुत तऊं नशाय ॥ २२ ॥
राहु शनीचर जन्मके, छटे चन्द्रमा होय ।
बालक जीवे रातिभर, देपि ग्रंथ कहि देय ॥ २३ ॥
रविके घर जो राहु परि, छठो चन्द्रमा मानु ।
बालक जीवे दुइ पहर, ब्रह्मा रक्षक जानु ॥ २४ ॥
राहु बारहे पाप षट, पिता बहुत दुख देइ ।
मातु भ्रात जीवे नहीं, पाराशर कहि देइ ॥ २५ ॥
छठे भौम राहु सातये, अठये शनिचर होय ।
तासु भ्रात जीवे नहीं, निहचै जानो सोय ॥ २६ ॥
उच्चके मंगरु राहु रवि, जे इक ठौरे होय ।
कुष्ठी हुइ वह नर मरै, जह जानौ सब कोय ॥ २७ ॥
छठे आठये भवनमें, जाके मंगरु होइ ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, निहचै तस्कर सोइ ॥ २८ ॥
शुक्र तीसरे गुरु सते, भानु समागम होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, निहचै तस्कर सोय ॥ २९ ॥
भौम राहु दोऊ परैं, धर्मगेहमें मानु ।

देषि शनीचर ग्यार हें, छह अंगुरी नर जानु ॥ ३० ॥
चौथे अठये बारहें, जन्म मंगली सोय ।
सतये घर मंगरु परै, तो पाग मंगली होय ॥ ३१ ॥
और मंगली शुभ कहे, कठिन मंगली पाग ।
मांग मंगलिन मिलै त्रिय, तौ जानौ बड़ भाग ॥ ३२ ॥
जो इनसों विधि नामिलै, मैं वरजौं समुझाय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, दुइमें एक नशाय ॥ ३३ ॥
निशानाथ शुभ भवनमें, गुरु त्रिकोनमें होय ।
मंगरु दशयें लग्नमें, उमर कही शत सोय ॥ ३४ ॥
लग्न जीव भृगु दूसरे, शनिसंयुत जो होय ।
राहु परै जो सातये, मातु न जीवे सोय ॥ ३५ ॥
नवये तीजे पापग्रह, तथा क्रूर अव जानु ।
वह नर जानो पापरत, भ्रात विहीनो मानु ॥ ३६ ॥
उच्च कहे बानी ग्रहे, सतये सूरज होय ।
तो वालककी मातुके, आंचर दूध न होय ॥ ३७ ॥
मंगरु षष्ट अष्ट शनि, सतये राहु जु आन ।
ता वालककी कहतु हौं, तरुनी जियत न जान ॥ ३८ ॥
शुक्र चंद्र पंचये भवन, गिरहें क्रूर वताय ।
ताके कन्या प्रथम हो, मातु बहुत दुख पाय ॥ ३९ ॥
सहज गेहमें राहु है, धने बृहस्पति जानु ।
तामें वुध अव युक्त है, तीन पुत्र उर मानु ॥ ४० ॥

चापे रवि शनि कुंभके, मेष चन्द्रमा मानु ।
मकर शुक्र अव जानिये, पितुधन भुगतै जानु ॥ ४१ ॥
राहु जीव अव क्षेत्रमें, लग्न चतुर्थे होय ।
तेइस वर्षसु जीवई, जह जानौ नर सोय ॥ ४२ ॥
लग्न क्रूर अरु भवन कुर, पाताल क्रूर जो होय ।
कर्म क्रूर अव देखिये, कष्ट पुत्रको होय ॥ ४३ ॥
भौम अर्क मंदा ग्रही, छटे आठये धाम ।
शंकर यादि रक्षा करै, एक वर्ष परिणाम ॥ ४४ ॥
शनी राहु मंगल शशी, भवन सातयें जुक्त ।
सात मासकै सात दिन, नर जीवे फिर मुक्त ॥ ४५ ॥
पंडित जन समुझौ भले, देखि ग्रंथकी चाल ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, वृद्ध जुवा अरु बाल ॥ ४६ ॥
लग्न जीव शशि पांचये, और पापग्रह होय ।
बालक वहतौ ना जिये, कोटि जतन कर कोयं ॥ ४७ ॥
शनीक्षेत्रमें भानु है, भानुक्षेत्र शनि होय ।
वर्ष वारही मीचु है, जह जानौ सव कोय ॥ ४८ ॥
भौमक्षेत्रमें जीव है, जीवक्षेत्रमें भौम ।
द्वादशवर्षसु जीवई, वदती एक न यौम ॥ ४९ ॥
बुद्ध भौम जो लग्न में, छटे द्रिष्ट ग्रह होय ।
वह बालक तस्कर बड़ो, हाथ पांव बिनु सोय ॥ ५० ॥

मातु भवन में राहु है, छटे आठये चंद।
वह बालक दिन वीसमें, परि है जमके फंद ॥ ५१ ॥
सतये नमये आठये, राहु परै निज आय।
आयुर्दा छः वर्ष की, सो मैं देउ बताय ॥ ५२ ॥
बरहे चंदा गेह में, पाप द्रिष्ट सो जान।
सो बालक अब जीवे, आठ वर्ष परमान ॥ ५३ ॥
लग्न गेह में अर्क होय, अरु शनि अठये धाम।
भृगु बरहें गुरु दिष्ट होय, एक मास जम धाम ॥ ५४ ॥
सिंह लग्न मंगल परै, सुत ग्रह चंदा होय।
राहु परैं जो बारहें, कुल दीपक सुत सोय ॥ ५५ ॥
षष्ट गेह में पाप ग्रह, शुभग्रेह में इंदु।
सूरज सिंहके जो पड़ैं, होवे महा अनन्दु ॥ ५६ ॥
मेष लग्न में भानु है, जीव कर्क के मानु।
भूसुत दशवें भवन में, महा भक्त बलवान ॥ ५७ ॥
बली सौम्य ग्रह लग्न में, केन्द्र में गुरु होय।
वा सुत के सुख संपदा, अति विचित्र नर सोय ॥ ५८ ॥
दशयें लग्न त्रिकोन में, भूसुत गुरु जो होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, धरमात्मा नर सोय ॥ ५९ ॥
जीव तथा बुध शुक्र जो, पड़ैं केन्द्र में आइ।
पंडित चतुर प्रवीन अति, नर धनवान कहाइ ॥ ६० ॥

अथ नाभसयोग।

सभी ग्रहे चर राशिमें, मूसल योग कहाय।
वह नर अभिमानी धनी, कारज बहुत कराय ॥ ६१ ॥
केन्द्रोमें शुभ सब पड़ैं, कहियतु माला योग।
वैष्णव रामगुलाम कहि, होवे सुख बहु भोग ॥ ६२ ॥
केन्द्रों सब पापी पड़ैं, तौ दल योग बताय।
ईर्षा मत्सर दुष्ट जन, अरु परदेश भ्रमाय ॥ ६३ ॥
असुहे समुहै केन्द्रमें, सभी ग्रहे परि जाइ।
गदा योग उद्यमी नर, भोगी धनी कहाय ॥ ६४ ॥
लग्न दशम अरु सातवें, सभी ग्रहे परि जाय।
शकट योग बहु रोग नर, गाड़ी हांक कमाय ॥ ६५ ॥
चौथे घर सब ग्रह पड़ै, विहंग योग तौ होय।
पर भोजन अरु टहल कर, है कलही नर सोय ॥ ६६ ॥
नमयें पंचयें लग्नमें, सभी ग्रहे परि जाय।
सदा सुखी वह नर रहै, श्रंगाटक योग कहाय ॥ ६७ ॥
लग्न छोंड तिरकोनमें, सब ग्रह तौ हल योग।
पशु पालै खेती करै, बहु नर होय निरोग ॥ ६८ ॥
लग्न सातवें शुभग्रहा, चौथे दशवें पाप।
वैष्णव रामगुलाम कहि, वज्र योग परताप ॥ ६९ ॥
सब के प्यारे शूरमा, जाहिर हों संसार।
युवा अवस्थामें दुखी, बाल वृद्ध सुखसार ॥ ७० ॥

दसवें चौथे शुभ ग्रहा, लग्न सातवें पाप।
शेषस्थान न कोई ग्रहा, तौ यव योग कलाप॥ ७१॥
युवा अवस्थामें सुखी, बालवृद्ध दुष जानु।
वैष्णव रामगुलाम कहि, पराक्रमी नर मानुं॥ ७२॥
चारों केन्द्रनके बिषै, सभी नव ग्रह होय।
कमल योग बल बुद्धि बहु, विदित कीर्ति सुख सोय॥ ७३॥
चारो केन्दर छोंडके, सभी नवग्रह होय।
वापी योग सदा सुखी, धनी 'कृपण' फुर सोय॥ ७४॥
लग्न दूसरे तीसरे, चौथे सब ग्रह होय।
पूप योग आनंद कर, दानी यज्ञी सोय॥ ७५॥
चौथे पंचवें सातवें, छटे सभी ग्रह होय।
ईषुयोग हिंसक वडो, जेहल 'दरोगा' सोय॥ ७६॥
दसयें नमयें आठवें, सतयें सब ग्रह होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, शक्ति योग है सोय॥ ७७॥
नीच कर्म अरु आलसी, द्रव्य हीन नर होय।
भोग रहित दूषण सहित, यह जानौ सब कोय॥ ७८॥
दसयें गिरहें बारहें, लग्न सभी ग्रह होय।
दंड योग निर वंसिया, अरु 'टहलू' नर सोय॥ ७९॥
लग्नसे सप्तम भाव लौं, एक एक ग्रह होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, तौं नौं योग कहोय॥ ८०॥
होय यशस्वी अवशिम नर, कभी दुखी भी होय।

भी सुखी भी होय वह, यद्यपि मूंजी सोय ॥ ८१ ॥
ौथे से दसवें तलक, एक २ ग्रह होय ।
ूट योग झूंटो वडो, जेहल 'पहरुवा' सोय ॥ ८२ ॥
सतयें घरसे लग्न तक, एक एक ग्रह होय ।
छत्र योग वय वृद्ध सुख, कुटुंव सुषी नर सोय ॥ ८३ ॥
दशमसे चौथे गेह लौं, एक एक ग्रह होय ।
चाप योग रण शूरमा, वाल वृद्ध सुख सोय ॥ ८४ ॥
दुसरे से अठवे तलक, एक एक ग्रह होय, ।
अर्द्ध चन्द्र योग कहत हैं, ताही को सव कोथ ॥ ८५ ॥
सुंदर सुभग सर्ब प्रिय, श्रेष्ठ नरन में होय ।
वैष्णव रामगुलाम सो, मित्र सबन को होय ॥ ८६ ॥
दुसरे से वरहें तलक, एक एक घर छोड़ ।
परैं नवग्रह आइ सब, समुद्र योग कहु जोड़ ॥ ८७ ॥
भोगवान धनवान अरु, राज तुल्य नर होय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, अती श्रेष्ठ है सोय ॥ ८८ ॥
एक पांच दुइ सात नौ, गिरहें सव ग्रह होय ।
चक्र योग ज्ञानी तपी, राज पूज नर सोय ॥ ८९ ॥
सातौ ग्रह एक ऐक कर, चाहि जहां परिजाय ।
वींणा योग कहावई, सो मैं देंउ वताप ॥ ९० ॥
'बारीकी' सोचत रहै, हर कारज में सोय ।
नृत्य गीत अति प्रिय लगै, द्रष्टि सूक्षम होय ॥ ९१ ॥

जो सातौ ग्रह छहों घर, चाहि जहां परि जांय।
दामिन योग कहाव ई, तस फल कहौं बुझाय ॥ ९२ ॥
अति उदार उपकार में, तत्पर रह हर वक्त।
पशु पालै ग्रामाधिपति, जाहिर होवे भक्त ॥ ९३ ॥
सातौ ग्रह चाहें जहां, पाँच घरन जो होय।
पाश योग धन संग्रही, सत कारज कर सोय ॥ ९४ ॥
सातौ ग्रह चाहें जहां, चारि गेह परिजाय।
कृषी कर्म उपकार रत, योग 'केदार' वताय ॥ ९५ ॥
सातौ ग्रह जो तीन घर, चाहि जहां पर होय।
शूल योग रण शूरमा, किंतु दरिद्री सोय ॥ ९६ ॥
सातौ ग्रह चाहें जहां, दुइ घर बीच जो होय।
पाखंडी धन रहित नर, यह युग योग कहोय ॥ ९७ ॥
सातौ ग्रह चाहें जहां, परैं एक ही थान।
गोलक योग कहाव ही, ताकौ करौं बषान ॥ ९८ ॥
निर्धन मलिन कु जाति जड़, और आलसी होय।
अज्ञानी निन्दित करम, भ्रमण करै नर सोय ॥ ९९ ॥
चौथे सतयें गेहमें, सभी ग्रहे परि जाइ।
शंख योग यशी कृती, अरु धनवान वताय ॥ १०० ॥
सतयें दशयें गेह में, जो सातौ ग्रह होय।
भोगवान धन संग्रही, वज्रुक योग है सोय ॥ १०१ ॥

सवें मैं अरु लग्न में, सभी ग्रहा जो होय।
यह ध्वज योग सुहावनो, उद्यम रत नर सोय ॥ १०२ ॥

इति श्री जोतिष चन्द्रिका श्री वैष्णव रामगुलाम पराशरकृत 'द्वितीयोध्याय' २ समाप्त.

अथ सूर्य्य फलम्

तन उतंग सो जानिये, जिहि लग्नेश पतंग।
चित्र रोग बश जानिये, वहुविधि पीड़ित अंग ॥ १ ॥
धने अर्क धन हीन है, वादी वाहन हीन।
सो नर है सुंदर अधिक, नैनरोग तन छीन ॥ २ ॥
सुरपति सम सुशील अति, दयावान सज्ञान।
भानु तीसरे भवन में, सुख संपत्ति बहु मान ॥ ३ ॥
कृश तन रोग शरीर युत, सुख वर्जित पर भाव।
दिनकर चौथे भवन में, वहु दारिद्र वताव ॥ ४ ॥
कल्ही कुटिल कुरूप जुत, लोभी सदा कुसंग।
मान भंग नर जानिये, सूरज पचयें अंग ॥ ५ ॥
षष्ट रवि पंडित चतुर, गई वस्तु फिर पाइ।
सुघर विवेकी भूप कहि, बड़ भागी नर आइ ॥ ६ ॥
अल्प पुत्र-प्रिय दुष्ट संग, गात रोग अधिकार।
जो घर सतयें रवि पड़ैं, कर सूक्षम व्योहार ॥ ७ ॥
कृत निंदक मन हीन सो; शत्रुन की भय भीर।

मृतक भवन दिन नाथ हैं, नैक नहीं मन धीर ॥ ८ ॥
धर्म न जानै हेतु नहि, ज्ञान बुद्धि को हीन।
अति कुशील सो जानिये, नव घर सूरज कीन ॥ ९ ॥
भ्रात हीन दुष्कर्म रत, शील रहित चल चित्त।
तेज अल्प नर जानिये, जाके दसयें मित्त ॥ १० ॥
सत्य शर्मता ज्ञान बहु, लाभ सरस तन सोय।
ता नर तरुनी सुधर बहु, जो 'गिर हैं' रवि होय ॥ ११ ॥
करै द्रव्य को खर्च बहु, जाके बरहें भानु।
वैष्णव रामगुलाम कहि, नैन तेज हत जानु ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रफलम्

निशानाथ लग्नेश जो, बहु प्रसन्न धन होय।
कामी किंतु सो जानिये, धर्म शील जुत सोय ॥ १३ ॥
धन पूरन सौभाग्य युत, चातुर पूज्य नरेश।
पंडित रामगुलाम कहि, चन्द्र जु होय धनेश ॥ १४ ॥
उड़पति तीजे भवनमें, धन पूरन कफ रोग।
चातुर पंडित बुद्धि वर, सम्पति बहु सुख भोग ॥ १५ ॥
विद्या निधि जस प्रगट नर, धनी सुखी नर होय।
निशानाथ चौथे भवन, बहु प्रवीन् नर सोय ॥ १६ ॥
कर्म सदा भय कृत करै, वायु रोग युत सोय।
बहु नर पौरुष मान है, इंदु पांचये होय ॥ १७ ॥
वित्त हीन बहु लालसा, मंद अगिन बहु जानु।

द्रिष्टि तिरीछो होय नर, चंद्र शत्रु ग्रह मानु ॥ १८ ॥
दुखिया मन अरु कष्ट उर, कृपण अधिक सो जानु ।
सागरसुत सतये परै, बहु वैरी अनुमानु ॥ १९ ॥
दीन्न कष्ट अरु अल्प जुत, रोग ग्रसित सब अंग ।
उड़गनपति अठयें भवन, ता नर की मति भंग ॥ २० ॥
कीर्तिमान अरु धर्मरत, जग जस गावै तासु ।
पाप हीन सुत जानिये, नमयें चन्दा जासु ॥ २१ ॥
बड़ भागी धनवान नर, मन प्रसन्न है सोय ।
राजसभा सब देखई, दधिसुत दसयें होय ॥ २२ ॥
चन्द्र ग्यारहैं लाभ बहु, शुभ मारग हरि भक्त ।
शीलमान धनवान सो, वह नर जाहर जक्त ॥ २३ ॥
पाप कर्म बहु विधि करै, हारि सदा सब ठौर ।
मंद बुद्धि नर जानिये, चंद बारहे सौर ॥ २४ ॥

अथ भौमफलम्

बुद्धि रहित तन रोग जुत, तन कुरूप विन दाम ।
महिसुत जो लग्नेश है, पर त्रियरत बहुकाम ॥ २५ ॥
भूसुत धन स्थान में, क्रिया हीन धनहीन ।
अपजस झूंठा लालची, बहु रोगी तनछीन ॥ २६ ॥
भौम तीसरे भवन में, शीलमान नरबीर ।
भूमि बिबेकी राज जुत, अति प्रवीण मतिधीर ॥ २७ ॥
भू सुत चौथे भवन में, कामी कपटी होय ।

पुत्रमान नर जानिये, महा बिनाशी सोय ॥ २८ ॥
पुत्रहीन अरु रोग जुत, मंगर पंचयें होय ।
भ्राता भगिनीसे विरत, यह जानौ सब कोय ॥ २९ ॥
शत्रु गेह भूसुत परै, शत्रुनको दुखदेइ ।
धर्म शील सुख संपदा, संतन सेव करेइ ॥ ३० ॥
रक्तरोग अति कोप जुत, नीच संग रति सोय ।
नारि रहितनर जानिये, भू सुत सतयें होय ॥ ३१ ॥
अष्ट भवनमें भूमि सुत, कुष्टी तन नर होय ।
क्रिया हीन गुनहीन सो, जहजानो सब कोय ॥ ३२ ॥
धर्म प्रीति नाहिं, नीचरुचि, जन मूरष वह सोय ।
क्रूर संग नर जानिये, भौम नमें घर होय ॥ ३३ ॥
भागवान बहु शील युत, पुत्र सहित सुषमान ।
शूरवीर नर होय सो, महिसुत दशयें जान ॥ ३४ ॥
लाभ भवन मंगरु गमन, पान बहुत रुचि होय ।
विप्र देव पूजन सरस, अति उत्तम है सोय ॥ ३५ ॥
निठुर विरोधी कपट तनु, बैरु सवन सो ठानु ।
वासु करै परदेश में, बरहें भूसुत मानु ॥ ३६ ॥

अथ बुध फलम्

तन बुध पंडित पारखी, रूप ज्ञान जस युक्त ।
रामगुलाम सु जानिये, दाता बहु धन भुक्त ॥ ३७ ॥
चन्द्र पुत्र, धन गेहमें, धन पूरन सुख मानु ।

रामगुलाम पूज्य नर, पंडित शील सुजान ॥ ३८ ॥
शशि सुत भ्राता गेहमें, गुरु वेदों पर वेश।
जग प्रसन्न नर जानिये, पाप कर्म नहि लेश ॥ ३९ ॥
बहु भ्राता जस युक्त नर, शशि सुत चौथे आइ।
वैष्णव रामगुलाम सो, पंडित चतुर कहाइ ॥ ४० ॥
रोहिणी सुत सुत गेह में, तीन पुत्र पुनि होय।
रिद्धि सिद्धि सुंदर चतुर, बुद्धिमान है सोय ॥ ४१ ॥
अति निशंक बुध छटे घर, करै कुटुम्ब सो दोष।
दुःख व्याधि कामी बड़ो, नर जानो बड़रोष ॥ ४२ ॥
शील सरस बुद्धिमान सुत, काम शास्त्र परबीन।
प्रिय नारिन कों जानिये, बुध सतयें घर लीन ॥ ४३ ॥
अष्टम बुध तन रोग युत, पर दारा रति चाव।
वह नर तौ आतुर बड़ौ, कछु न जानतु भाव ॥ ४४ ॥
धर्मे बुद्ध धर्मात्मा, ज्ञान मान अति होय।
सत्य बचन नर भाषई, धन पूरन है सोय ॥ ४५ ॥
कर्म बुद्ध धनमान सो, भाग्यवान शुभजानु।
बड़ो लाभ नहि रोग तन, सुप अनुरागी ज्ञानु ॥ ४६ ॥
दाता पंडित चतुर नर, वहु भोगी धन मान।
वैष्णव रामगुलाम कहि, बुद्ध ग्यारहें जान ॥ ४७ ॥
अधिक खर्च रोगी सदां, पाप क्रूर बुधि सोय।
बंधु विरोधी जानिये, बुध द्वादश घर होय ॥ ४८ ॥

अथ गुरु फलम्

लग्ने गुरू सुशीलता, रूप मान धन युक्त ।
नृप मंत्री बस्तर विभौ, सो जानो नर मुक्त ॥ ४९ ॥
धने जीव धनवान सो, महिषी वाहन कूप ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, पंडित चतुर सुरूप ॥ ५० ॥
त्रितीये गुरु दाता सबल, क्रियामान धनमान ।
तीरथ यात्रा वहु करै, अरु ज्ञानी नर जान ॥ ५१ ॥
चौथे गुरु जग पूज्य है, सुखद सुशील सुजान ।
कुल रक्षक सुत भक्तिरत, जह निहचे कर मान ॥ ५२ ॥
कविता पंडित शील युत, सुषी धर्म वड़ जानु ।
करै जु कर्म प्रवीणता, जीव पांचयें मानु ॥ ५३ ॥
षष्ठे गुरु निर्धन अधम, शत्रु वहुत मतिहीन ।
कामी क्रोधी नीच संग, कुटिल अंग तन छीन ॥ ५४ ॥
काम कला रत महावल, धन दानी पावित्र ।
सुरगुरु सतये भवन में, मानी चित्र विचित्र ॥ ५५ ॥
कृपण रोग जुत नीच संग, औरु कुकर्मों जानु ।
होइ कुपित्तो हीन बुद्धि, अष्टम गुरू बषानु ॥ ५६ ॥
धर्म बृहस्पति जानिये, अर्थ करै नर सोय ।
साधन को सतसंग वहु, मन सांचो जन होय ॥ ५७ ॥
अवनि कृत्य सुष संपदा, राजा तुल्य सरूप ।
दशये घर गुरु देखिये, होवे निहचे भूप ॥ ५८ ॥

ज्ञान दया हिरदे बसै, धनी सुलक्षण होय ।
अति सरूप नर जानिये, सुर गुरु 'गिर हें' होय ॥ ५९ ॥
रोग ग्रसित अरुनिंद नर, पराक्रम ते हीन ।
नीच संग अति प्रिय लगै, गुरु द्वादश घर कीन ॥ ६० ॥

अथ शुक्रफलम्

शीलवंत सुंदर सबल, शुक्र होय लग्नेश ।
धन विद्या पूरण विभौ, सुषी सुदेश विदेश ॥ ६१ ॥
धने शुक्र पंडित चतुर, धनवंतो गुन ज्ञान ।
रिद्धि सिद्धि बहु देखिये, सम्पति सुख पहिचान ॥ ६२ ॥
शुक्र तीसरे भवन में, जोग ध्यान बल वीर ।
दाता पुनि न्टपजाति है, सुंदर बहु मति धीर ॥ ६३ ॥
शुक्र चतुर्थे भवन में, सुंदर सुषी सुजान ।
ग्राम प्रताप विवेक युत, पंडित चतुर वषान ॥ ६४ ॥
शुभग चतुर धनमान सुत, गोविंद गुनी प्रवीन ।
सुतस्थान भृगु जासु के, बहु प्रकार सुख कीन ॥ ६५ ॥
सुखी सदा वह जानिये, छटे शुक्र दरसाय ।
बहु समर्थ सुत जानियें, तन सुंदर सरसाय ॥ ६६ ॥
जाके भृगु सतयें भवन, धन पूरन नर सोय ।
भागवान जाहर जगत, जह जानो सब कोय ॥ ६७ ॥
कलह प्रिय अरु रोग युत, ब्रथा जन्म है तासु ।
तन कुरूप भृगु अष्टमें, नीच गेह बहुवासु ॥ ६८ ॥

नमयें भृगु धनवान बहु, धर्म ज्ञान बुद्धि होय।
राज समाज सहित सो, सुघर चतुर नर सोय ॥ ६९ ॥
कर्म धर्म सतसंत प्रिय, जोभृगु दसयें संग।
वैष्णव रामगुलाम कहि होवे सुंदर अंग ॥ ७० ॥
लाभ भवनमें शुक्र है, जसो मान सुत होय।
क्रियामान भोगी धनी, चतुर विवेकी सोय ॥ ७१ ॥
पापिष्टी कपटी कुटिल, क्रोधी कामी दीन।
वैष्णव रामगुलाम कहि, भृगु द्वादश घर कीन ॥ ७२ ॥

अथ शनिफलम्

रविसुत जाके तन परै, रोगी कृपण कुरूप।
शठ कुशील बहु जानियें, होय महां नर भूप ॥ ७३ ॥
वात पित्त कफ जुक्त है, द्रव्य हीन नर मानु।
धनस्थान जो शनि परै, गुण विहीन नर जानु ॥ ७४ ॥
भवन तीसरे शनि परै, गुरु प्रवीन नर भूप।
बहु विचित्र तन शूरमा, सुंदर विशदसरूप ॥ ७५ ॥
कीर्तिमान सुखहीन है, गुन स्वभाव दोउ संग।
चौथे घर जो शनि परै, करै कुटुम्ब कौंदंग ॥ ७६ ॥
रविसुत पंचये भवन में, क्रिया हीन सुत हीन।
स्याम रूप सुत जानियें, अति कठोर मति हीन ॥ ७७ ॥
शत्रु भवनमें भानुसुत, गुन संतोष सुधाम।
महिषी वाहन पुत्र बहु, धन युत रामगुलाम ॥ ७८ ॥

मिथुन पुत्र सतयें भवन, तन स्त्री सुष पाइ।
वह सुत शत्रुन कौं, हनै अति प्रवीन सुखदाइ ॥ ७९ ॥
क्रोध दरिद्री आतुरो, उदर रोग कटु बैन।
वृथा बाद बहुतै करै, रविसुत अठयें ऐन ॥ ८० ॥
निर विवेक रिपु बस सदा, नैक नहीं तन लाज।
मंद कर्म परदार रति, होय नवैं शनिराज ॥ ८१ ॥
भानुसुअन दसयें भवन, धन अरु धर्म नसाय।
गुन विहीन शुचि नैक नहिं, रोग शरीरहि पाय ॥ ८२ ॥
विद्या सर्व विचित्र तनु, राजमान गुन धाम।
घोड़ा महिषी सहित सब, मंद ग्यारहे ठाम ॥ ८३ ॥
मंद बारहें भवन में, वित्त हीन नर जानु।
वंधु वैर पुनि कटु वचन, रामगुलाम अमानु ॥ ८४ ॥

अथ राहु फलम्

भंगनेत्र कटुता वचन, स्याम शरीरहि रोग।
लग्न राहु जिहिके परै, सुत चिंता बड़ जोग ॥ ८५ ॥
निज कुटुम्बमें मान नहिं, नीच कर्म कहकीन।
चिन्ह बाम अंग राहु धन, बहु प्रकार नर दीन ॥ ८६ ॥
पराक्रम अति तुच्छ नर, वित्त दान तप हीन।
राहु तीसरे भवनमें, पर दारा वस कीन ॥ ८७ ॥
सुष संपति वाहन अलप, दुष्ट सदा रह दीन।

घरमें विग्रह कौं करै, राहु चौथ घर कीन ॥ ८८ ॥
पुत्र भवनमें राहु है, अल्प भार्या कष्ट ।
पाप रूप सुत जानिये, उदर रोग, नहि तिष्ट ॥ ८९ ॥
शत्रुनाश संग्राम में, जोवन धन संताप ।
छटे राहु कीरति अधिक, पौरुष बल परताप ॥ ९० ॥
बल बुद्धी कारज बली, तनहि जु पीड़ित होय ।
रिपु भय ताको जानियें, राहु सातवें सोय ॥ ९१ ॥
गुप्त आपदा जुत सदां, बस्तु दुःखकी हानि ।
अर्थ भोगसो जानिये, अष्टम राहु बषानि ॥ ९२ ॥
धर्म गह में राहु है, नहिं तीरथ व्रत कर्म ।
वह नर मूरष चपल अति, जानत दया न धर्म ॥ ९३ ॥
मात. पिताकों सुख नहीं, महा विषादी सोय ।
उदित होय परदेशमें, जो दशयें राहू होय ॥ ९४ ॥
नीच जनन ते लाभ बड़, सुषी सदां पर वीन ।
वा सुतके बल बहुत हो, राहु लाभ घर लीन ॥ ९५ ॥
नैत्र रोग चित थिर नहीं, कर्म करै वे अर्थ ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, राहु बार हें कर्थ ॥ ९६ ॥

अथ केत फलम्

लग्न केतु तन रोग जुत, फिरहि अर्थ सब खोय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, और कलेशी होय ॥ ९७ ॥

केतु धन नाहि वहु, निजकृत भाषी होय ।
विरोध जु सबनसो, रोग जटित तन सोय ॥ ९८ ॥
नाश भुज पीर जुत, चितै दोष नितलाव ।
केतु तीसरे भवनमें, मित्रवाद अति भाव ॥ ९९ ॥
नीच सँग सुखवंत नाहिं, जाके चौथे केतु ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, मानै सुनै न चेतु ॥ १०० ॥
विद्या मति कर हीन नर, पुत्र न होवे ताहि ।
नीच देव सेवे सदां, केतु पांचये जाहि ॥ १०१ ॥
पौरुष वल वहु जानिये, शत्रु वाद जित होय ।
मामा को पीड़ा करै, छटे केतु जो होय ॥ १०२ ॥
तन पतरो मन कुटिलसो, नर करनीको हीन ।
जाके सतये भवनमें, केतु होय सो दीन ॥ १०३ ॥
गुदा रोग जुत नीच रत, दुर बुद्धी स विरोध ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, केतु आठये बोध ॥ १०४ ॥
धर्म नाश गत अंग वहु, देह मलिक्षणतासु ।
सिषी गेह नमये परैं, अति कुरूप तन वासु ॥ १०५ ॥
तनु पीड़ित माता पिता, निजतन की पुनि हानि ।
नीच कर्म रत रह सदां, केतु कर्म ग्रह मानि ॥ १०६ ॥
सुखी सदा जन पोष करि, सर्व अरिष्ट निवार ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, गिरहे सिषी सुषार ॥ १०७ ॥

पाप बुद्धि धन हीन नर, नेत्र कान को रोग ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, सिषी बारहे योग ॥ १०८ ॥

इति श्रीवैष्णव रामगुलाम. पराशरकृत जोतिष
चंद्रिका तृतीयोऽध्याय ३ समाप्तः ।

अथ एकत्र दुइ २ ग्रह फलम.

सू.चं. सूर्य चन्द्र इक लग्न में, पराक्रमी नर जानु ।
धनी नीतिक्रियामानहै, जह निहचे पहिचानु ॥ १ ॥
सू.मं. रवि मंगर संग में परैं, पापी वादी मानु ।
धनी बली अरु तेजस्वी, केवल मूरख जानु ॥ २ ॥
सू.बु. रवि बुध मंदिर एकमें, राज्य पूज्य धन जुक्त ।
शीलमान पंडित चतुर, क्रियामान सुषभुक्त ॥ ३ ॥
सू.बृ. रवि गुरु संगम नृपति सम, बाण प्रतापी होय ।
धर्म इष्ट अरुमित्र गुन, जहजानो नर सोय ॥ ४ ॥
सू.शु. रवि शुक्र इक भवन में, नेत्र दुर्बले होय ।
शत्रुजीत अरु बंधु जुत, जह जानौ सब कोय ॥ ५ ॥
सू. श. रवि शनि इक स्थान में, त्रिया हीन नर होय ।
संपति सुत विद्या नहीं, यह जानों सब कोय ॥ ६ ॥
सू. रा. भानु राहु इक भवन में, बैर भाव पहिचानु ।
बालक अल्प बताइये, जह निहचे करि मानु ॥ ७ ॥
सू. के. सूर्य केतु संगम भये, कलहा बहुत बताय ।

वैष्णव रामगुलाम कहि, बालक कष्ट जताय ॥ ८ ॥
चं. मं. शशि मंगल इक भवन में, शीलमान गुणमान ।
धनी शूरमा आतुरो, बुद्धिमान नर जान ॥ ९ ॥
चं. बु. शशि बुध को संगम कहो, पंडित कवि धन होय ।
नारी सुघर सरूप जुत, भागमान सुत सोय ॥ १० ॥
चं बृ. शशि गुरु मंदिर एक में, द्विज सुर पूजा भक्ति ।
पुत्रमान धन शीलता, चतुर रूप तन शक्ति ॥ ११ ॥
चं. शु. शशि भृगु हैं अस्थान इक, हुइ चाकर परदेश ।
पुत्रमान तिहि जानिये सुंदर अधिक सुवेश ॥ १२ ॥
चं श. शशि शनि एकै भवन में, दीरघ तन है तासु ।
वृद्ध तरुण गमने सदां, वेश्या घर बहु वासु ॥ १३ ॥
चं. रा. चंद्र राहु इक भवन में, बालक कष्ट बखानु ।
नेत्र रोग अरु दाह वस, मूरख अति अज्ञान ॥ १४ ॥
चं. के. चंद्र केतु इक भवन में, कलही कुटिल कहाइ ।
अग्नि अल्प बहु जानिये, कहत ग्रंथ समुझाइ ॥ १५ ॥
मं. बु. मंगर बुध इक भवन में, नित्य अपजसी सोय ।
दुइ नारी पापी सदां, जाके जोग जु होय ॥ १६ ॥
मं. बृ. मंगर गुरु संगम भये, शशि सुख अरु परबीन ।
शीलमान पंडित चतुर, सुष सनेह नर कीन ॥ १७ ॥
मं. शु. भूसुत शुकुर धाम इक, परदारा रति भाइ ।
वादी शठ क्रोधी कहो, मूरष नर बहु आइ ॥ १८ ॥

मं. श. मंगरु शनि इक भवन में, कुटिल कुपित्तो होय।
परपंची निन्दित करम, रहैं दुखारी सोय ॥ १९ ॥
मं. रा. भौम राहु इक भवन में, सो नर मूरष जानु।
कलह बैर सब सौं करै, जह निहचे करि मानु ॥२०॥
मं. के. मंगरासिषि अस्थान इक, परत्रिय सों अति चाउ।
बुद्धि हीन सो जानिये, कछु न जानत भाउ ॥२१॥
बु. बृ. बुद्ध गुरु संगम कहतु हौं, पंडित कवि धन जुक्त।
धिरजी चतुर विचक्षणीं, वह जानों सुष भुक्त ॥२२॥
बु. शु. बुद्ध शुक्र संगम भये, देव रूप धनमान।
गाय पारषी धर्म जुत, बुद्धिमान सो जान ॥ २३ ॥
बु. श. बुद्ध मंद संजोग है, शीलमान बहु होय।
बातैं चतुर सुकाज कर, नर जानौ सब कोय ॥२४॥
बु. रा. बुद्ध राहु संगम भये, महा कु लक्षण होय।
वटपारी रोगीरिनी, दुख मंतो नर सोय ॥ २५ ॥
बु. के. बुद्ध केतु संगम भये, शूर बीर नर होय।
सभामध्य वह बोलई, बात सत्य कहि सोय ॥ २६ ॥
गु. शु. गुरु शुक्कर संजोगमें, दारुन, धनी बखानु।
विद्या धर्म सुशीलता, रूपमान वह जानु ॥ २७ ॥
गु. श. गुरु शनि ऐकै ठौर हैं, गांव रूप बहु होय।
भाग्यमान बड़ जानिये, सुत धनवंतो सोय ॥ २८ ॥
गु. रा. जीव राहु संगम भये, रोग कष्ट अधिकाइ।

वालक अल्प सु जानिये, बारह वर्ष बताइ ॥ २९ ॥

गु. के. जीव केतु इक भवन में, फोरा कंठ बताय।
रोग कष्ट दश वर्ष में, पहिले देउ जताय ॥ ३० ॥

शु. श. शुक्र शनींचर धाम इक, मल्ल पराक्रम मानु।
बली होय बड़ शूरमा, नारि पुरुष सुख जानु ॥३१॥

शु. रा. शुक्र राहु इक भवनमें, पुत्रमान धनमान।
महिषी वाहन जानिये, दयावंत करु दान॥ ३२ ॥

शु. के. शुक्र सिषी संगम भये, नित कलेश घर जानु।
जलकी अल्प बताइये, वर्ष आठ परमानु ॥ ३३ ॥

श. रा. मंद राहु इक भवनमें, दाता शूर सुजानु।
गौ महिषी सुख संपदा, पुत्रमान सुखमानु ॥ ३४ ॥

श. के. भानु पुत्र अरु केतु संग, तन मन पूरण होय।
वह वालक परदेश रहि, नाम करै नर सोय॥ ३५ ॥

अथ एकत्र तीन २ गृह फलम्।

सू.चं.मं. सूर्य चन्द अरु भौम जो, परै एक ही धाम।
प्रीतिमान सुखमान नर, वहुत करै शुभ काम ॥३६॥

सू.चं.बु. सूर्य चन्द्र बुध धाम इक, राज मान धन युक्त।
वह बड़भागी जानिये, सुत दारा बहु भुक्त ॥ ३७ ॥

सू.चं.बृ. सूर्य चन्द्र गुरु भवन इक, सुंदर चतुर सुजान।
वैष्णव रामगुलाम कहि, राज सभा सनमान ॥३८॥

सू.चं.शु. सूर्य चन्द्र अरु शुक्र जो, तीनौं ऐकै धाम।

चंचलचित अति आतुरो, धन संपति बड़ नाम ॥३९॥

सू.चं.श. सूर्य चन्द्र शनि आइ कर, परैं इकट्ठे होय ।
सुख संपति बहु जानियें, यद्यपि मूरष सोय ॥४०॥

सू.मं.बु. भानु भौम बुध जोग इक, वह किरषी नर होय ।
निष्ट रोग तिहि जानियें, सहज प्रतापी सोय ॥४१॥

सू.मं.बृ. रवि मंगरु गुरु धाम इक, राजा मंत्री होय ।
सत्य बचन परचंडजुत, जह जानौं सब कोय ॥४२॥

सू.मं.शु. अर्क भौम शुक्कर कहे, एक भवन में जानु ।
बतचल आतुर अति खरो, बहु विधि के पहिचानु॥४३॥

सू.मं.श. रवि मंगरु शनि धाम इक, मूरख मति धन हीन ।
रोगी कलही कुटिल सो, सदा रहै तन छीन॥ ४४ ॥

सू.बु.बृ. रवि बुध गुरु इक धाम में, नेत्र रोग बहु होय ।
शास्त्र पढ़ै धनमान नर, निहचै जानौ सोय ॥ ४५ ॥

सू.बु.शु. रवि बुध शुक्कर धाम इक, गुरू पूज्य नर होय ।
देश भ्रमण बहु तक करै, द्रव्य कमावै सोय ॥४६॥

सू.बु.श. सूर्य बुद्ध शनि ठौर इक, पर दारा रति धाम ।
बंधु रहित परदेश भ्रम, कर कलेश नर बाम ॥ ४७ ॥

सू.बृ.शु. अर्क जीव शुक्कर कहे, तीनों ऐकै धाम ।
नृप मंत्री प्रण हीन सो, दुष्ट कृपण बद काम ॥ ४८ ॥

सू.बृ.श. रवि गुरु शनि सोहत निकट, पुत्रवंत पर बीन ।
वैष्णव रामगुलाम नृप, सुख सम्पति बहुदीन ॥४९॥

सू.शु.श. अर्क शुक्र शनि एक घर, दुख चारी नर होय।
कुष्टी कल्ही कृपण है, जह जानौ सब कोय ॥ ५० ॥
चं.मं.बु. शशि मंगरु बुध जोगमें, पापीं नीच बषानु।
वैष्णव रामगुलाम तिहि, भ्रात विहीनो मानु ॥५१॥
चं.मं.बृ. चन्द्र जीव मंगरु कहे, स्त्री चतुर सुजानु।
चंद्र वदन मृगलोचनी, सुख भोगी नर मानु ॥ ५२ ॥
चं.मं.शु. चंद्र शुक्र मंगरु सबी, आइ परैं इक ठोर।
शीलमान सुतमान है, तिहि जानौं धन जोर ॥ ५३ ॥
चं.मं.श. शशि मंगरु शनि योग में, अल्प मित्र जह जानु।
छुधावंत कटुता वचन, नित प्रति ताहि बखानु॥५४॥
चं.बु.बृ. चन्द्र जीव बुध योग में, तेज वडो धनजुक्त।
पुत्रवंत अति सुभट है, प्रगट होत जसभुक्त ॥ ५५ ॥
चं.बु.शु. शशि बुध शुक्कुर धाम इक, विद्या धनी बषानु।
लाभ चतुरई शील गुन,जाहि शक्ति वर मानु ॥५६॥
चं.बु.श. चंद्रा बुध शनि योगमें, भूपति पूज्यक होय।
भागमान पंडित चतुर, शूर कहो नर सोय ॥ ५७ ॥
चं.बृ.शु. चंद्र वृहस्पति शुक्र संग, पंडित बड़ धनमान।
साधु सेव जाहिर चतुर, नेत्र बहुत शुभ जान ॥५८॥
चं.बृ.श. चंदा गुरु शनि योगमें, रोग नहीं तन होय।
शास्त्र पढ़ै परिवार जुत, भाग्यवान सुत सोय ॥५९॥
चं.शु.श. चन्द्र शुक्र शनि धाम इक, पंडित पढ़ै पुरान ॥

वैष्णव रामगुलाम सो, कुल दीपक करि मान ॥६०॥

मं.बु.बृ. मंगर बुध गुरु जोगमें, जुवती पति बलवान ।
कवि पंडित उपकार अरु, चातुर ताहि बखान ॥६१॥

मं.बु.शु. मंगरु बुध भृगु धाम इक, चंचल कपट स्वरूप ।
कुलवंतो तिहि जानिये, मानत नाही भूप ॥ ६२ ॥

मं.बु.श. मंगरबुध शनि जोग में, नेत्र रोग पहिचानु ।
पुरवासी वह जानिये निहचे पंगुला मानु ॥ ६३ ॥

मं.बृ.शु. मंगर गुरु भृगु तीन जो, परैं एकहीं धाम ।
चतुर शिरोमणि जानिये, जाहिर होवै नाम ॥ ६४ ॥

मं.बृ.श. मंगर रविसुत गुरु कहे, जे तीनो एक धाम ।
चतुर सुघर दारा मिले, सुख संपति बहु काम ॥६५॥

मं.शु.श. मंगरु भृगु शनि धाम इक, शीलमान वह होय ।
सम्पति नाहि दरिद्र नाहिं, सुख कबहूं ना सोय ॥६६॥

बु.बृ.शु. बुध गुरु शुक्र संग में, रूप चतुरई धाम ।
नृप कीरति अति जगतिमें,सतवादी शुभ काम ॥६७॥

बु.बृ.श. बुध गुरु शनि यक धाममें, धिरजी सुखी प्रवीन ।
धन पूरन परिवार जुत, नाम जगत में कीन ॥ ६८ ॥

बु.शु.श. बुद्ध शुक्रशनि जोगमें, मूरख पर त्रिय लीन ।
कलश भंग झूंठो बडो, संदेहो तन छींन ॥ ६९ ॥

बृ.शु.श. गुरू शुक्र शनि ईकठे, राज कीर्ति गुनमान ।
बीच वंशमें हंसवत, शीलमान नर जान ॥ ७० ॥

तीन जोग सब युक्त हैं, भागमान नर जानु।
पाप स्त्री दुख नर बिघन, सो दुर बुद्धी मान ॥७१ ॥
प्रिया पाप जुत चन्द्र है, माता पिता विनास।
शुभ ग्रह शुभधाममें, सुख संपति सुखवास ॥ ७२ ॥

अथ चार ग्रह एकत्र फल.

सू.चं.मं.बु. रवि शशि मंगर बुद्ध जे, एक भवन इक ठौर।
तस्कर वादी सुखी नर, बहुत भजन बल जोर ॥७३॥
सू.चं.मं.बृ. रवि शशि मंगर जीव संग, धनी निपुण नर जानु।
तेजवंत ज्ञानी बडो, परम चतुर बुधिमान ॥ ७४ ॥
सू.चं.मं.शु. रवि शशि मंगर और भृगु, सुखी पुत्र जस युक्त।
भागमान ग्रंथन पढै, बहु ज्ञानी हरिभक्त ॥ ७५ ॥
सू.चं.मं.श. रवि शशि मंगर और शनि, एक भवनमें होय।
भिक्षुक मूरष निरधनी, अवशि जानिये सोय ॥७६॥
सू.चं.बु.बृ. अर्क सौम्य गुरु बुद्ध जे, एक भवन में जानु।
धनी शूरमा रूप जुत, रोग हीन सुख धाम ॥ ७७ ॥
सू.चं.बु.शु. सूर्यचंद्र बुध शुक्रसे, राजमान धन युक्त।
अति सुंदर परवीन नर, वैष्णव हो हरिभक्त ॥ ७८ ॥
सू.चं.बु.श. रवि शशि बुध शनि जे कहे, एक भवन में जाहि।
भिक्षुक धन वहु मांगई, मातापिता न ताहि ॥ ७९ ॥
सू.चं.बृ.शु. सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र जे, राज प्रजा धन युक्त।
बंधु वंश कुल दीप कहि, अरु जानौ शुभ भुक्त ॥८०॥

सू.चं.बृ.श. अर्क चन्द्र अरु जीव शनि, एक भवन में होय ।
स्त्री प्रिय वृत हीन है, अब गुण बहुत कहोय ॥८१॥
सू.चं.शु.श. भानु चन्द्रमा शुक्र शनि, चारौं ग्रह इक धाम ।
दुर्वल तन वनिता सबल, अक्कर करै सुकाम ॥८२॥
सू.मं.बु.बृ. भानु भौम बुध और गुरु, परैं आइ इक ठोर ।
विद्यमान नर जानिये, बुद्धी बल धन जोर ॥ ८३ ॥
सू.मं.बु.शु. सूर्य बुद्ध और भौम भृगु, एक भवन में होय।
मिश्र गुणनफल जानिये, अभिमानी वड़ होय ॥८४॥
सू.मं.बु.श. सूरज बुध मंगर शनी, चारि एक ही गेह ।
जोधा कवि भूपति सचिव, ज्ञानवंत शुभ नेह ॥८५॥
सू.मंबृ.शु. अर्क भौंमगुरु शुक्र जे, परैं एक ही धाम।
पूजि योग धनपति सबल, नृप मानै सब काम ॥८६॥
सू.मं.बृ.श. रविअरु रविसुत भौम गुरु, परै आइ इक ठौर ।
कुंटुम्ब विरोधी जानियें, यद्यपि हो धन जोर ॥८७॥
सू.मं.शु.श. सूर्य मंगर शुक्र शनि, संजोगे जे होइ ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, भागमान है सोय ॥ ८८ ॥
सू.बु.गु.शु. सूर्य बुध गुरु शुक्रसंग, धनी सुखी वहजान।
सिद्धि वृद्धि संपति सभी, ताके कहै बषान ॥ ८९ ॥
सू.बु.बृ.श. सूर्य बुध गुरु शनि कहे, एक संग जो होय ।
भ्रात मात सुत निरगुनी, यह जानो सब कोय ॥९०॥
सू.बु.शु.श. रवि बुध शुक्र शनि कहे, चारि एक ही धाम ।

मंत्र योग तन शील है, सुखी धनी बहु काम ॥९१॥
सू.बृ.शु.श. अर्क जीव शनि शुक्र संग, परैं एक ही धाम ।
भोगी भूषन राज्य जुत, रूप अधिक शुभ काम॥९२॥
च.मं.बु.बृ. चंद्र भौम गुरु बुद्ध जे, एक भवन में वास ।
वस्त्र विचक्षण राज जुत, होवे नर सुख रास॥ ९३ ॥
चं.मं.बु.शु. शशि मंगरु बुध शुक्र संग, कलही निंद्री होय ।
बंधु दोष सो जानिये, शत जीवै नर सोय ॥ ९४ ॥
चं.मं.बु.श. शशि मंगर, बुध शनि परै, एक भवनमें आइ ।
साधु जोग सुरजानिये, दुइ पितु को नर आइ ॥९५॥
चं.मं.बृ.शु. शशि मंगरु गुरु शुक्र जे, एक भवन में जुक्त ।
धनवंतो सुखमान नर, अरु जानों जस भुक्त॥ ९६ ॥
चं.मं.बृ.श. शशि मंग रु गुरु शनि परैं, एक गेह में धाइ ।
धीरज धन मानी बडो, शूर बीर नर आइ ॥ ९७ ॥
चं.मं.शु.श. शशि मंगरु शुक्र शनी, एक गेह पहिचानु ।
कुल प्रतिगामी होय नर, जह निहचे कर जानु ॥९८॥
चं.बु.बृ.शु. शशि बुध गुरु शुक्कुर सहित, धनी विचक्षण सोय ।
दुइ माता सुख जानिये, निहचै ताके होय ॥ ९९ ॥
चं.बु.बृ.श. शशि बुध गुरु शनि एक घर, कवि पंडित धन युक्त ।
जसी धर्म जुत तेज बहु, नर जानों हरि भक्त ॥१००॥
चं.बु.शु.श. शशि बुध शुक्र शनि कहे, परैं धाम इक आइ ।
कुल दीपक वादी कपट, अरु अपजस बहु पाइ॥१०१॥

चं.बृ.शु.श. शनी शुक्र गुरु चन्द्रमा, एक भवन में होय।
पर दारा संग रति सदा,जह जानौं सब कोय॥१०२॥
मं.बु.बृ.शु. भौम बुध गुरु शुक्र जे, एक भवन में होय।
धर्म धनी श्रीजुक्त नर, शीलमान सुख सोय॥१०३॥
मं.बुबृ.श. मंगर बुध गुरु शनि भये, जोगी निर्धन जानु।
विद्या वादी नर चतुर,जह निहचे कर मानु॥१०४॥
मं.बु.शु.श. भौम बुद्ध शनि शुक्र जो, ऐक ठौर घर कीन।
बाहु दीर्घ जोधा बली, भोजन सुघर प्रवीन॥१०५॥
मं.बृ.शु.श. मंगर गुरु शनि शुक्र जो, परैं एकही धाम।
धनी जती स्त्री सती, नर जानौं निष्काम॥ १०६॥
बु.बृ.शु.श. बुध गुरु शुक्र शनि परैं, चारि एक ही ठौर।
आतुर वह परदेश भ्रम,पर त्रिय रति कर भोर॥१०७॥

अथ पांच ग्रह एकत्रफल वर्णन

सू.चं.मं.बु.बृ. रवि शशि मंगर बुध गुरू, पांच एक ही धाम।
दुषी प्रपंची विघनई, लालच लोभी काम॥ १०८॥
सू.चं.मं.बु.शु. रवि शशि मंगर बुध भृगू, एक भवन में आन।
बंधु हीन नृप राज बहु, पराक्रमी नर जान॥ १०९॥
सू.चं.मं.बु.श. रवि शशि मंगरु बुध शनी,एक भवन इकठांव।
अल्प दुखी बहु कला जुत,काम केलि बड चाव॥११०॥
सू.चं.मं.बृ.शु. सूर्य चन्द्र मंगल गुरू, अरु भृगु होवै साथ।
नारायण को भजन करि,नितमति धनमें हाथ॥१११॥

सू.चं.मं.बृ.श. रवि शशि मंगरु जीव शनि, परैं आइ इक सोय।
माता पिता न जीवई, दुखी दरिद्री होय ॥ ११२ ॥
सू.चं.मं.शु.श. रवि शशि मंगरु शुक्र शनि, एक भवनमें युक्त।
द्रव्य पराई लेइ हरि, पर दारा रति जुक्त ॥ ११३ ॥
सू. चं.बु.बृ.शु. रवि शशि बुध गुरु शुक्र जे, परैं एक ही ठौर।
राजा मंत्री भूमि सुत, चतुर और वर जोर ॥११४॥
सू.चं.बु.शु.श. सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि, एक भवन में जानु।
धनी पुत्र स्वर हीन है, मृत्ति शरीरह मानु ॥११५॥
सू.बु.बृ.शु.श. रवि बुध गुरु शुक्कर शनी, तिहि जानो सुख युक्त।
मित्र मीत शास्तर पढ़े, धर्म शलिता जुक्त ॥ ११६ ॥
चं.मं.बु.बृ.शु. शशि मंगर बुध शुक्र गुरु, तिह होवै मन हर्ष ।
धन विद्या पंडित चतुर, आयु कही शत वर्ष ॥११७॥
चं.मं.बु.शु.श. शशि मंगर बुध शुक्र शनि, एक भवन में होय।
पीर पराई जानई, पर उपकारी सोय ॥ ११८ ॥
चं मं.बृ.शु.श. शशि मंगर गुरु शुक्र शनि, सो जानों अव धूत।
मलिन मूर्ख बहु निर्धनी, क्रोधी कुटिल कपूत ॥११९॥
चं.बु.बृ.शु.श. शशि बुध शुक्र जीव शनि, इक ठौरे शुभ मान।
राजा मंत्री राज जुत, पंडित चतुर सुजान ॥ १२० ॥

अथ षटग्रहफल

सू.चं.मं.बु.बृ.शु. रवि शशि बुध मंगर गुरू, शुक्र एक ही ठाम।
विद्या बुधि धन धर्म जुत, भागवान बड नाम ॥१२१॥

सू.चं.मं.बु.बृ.श. रवि शशि मंगरु बुध गुरू,शनि एकत्र वषानु ।
पर कार्जी दाता सबल, संतोषी बलबानु ॥ १२२ ॥
सू.चं.मं.बु.शु.श. रवि शशि मंगर बुध भृगू,शनि हो एकै ठाम ।
भाग्यवान शुभ संगती, भ्रमै देश बहु धाम ॥ १२३ ॥
सू.चं.मं.बृ.शु.श. रवि चंदा मंगर गुरू शुक्र मंद संग जानु ।
सबल चतुर नीती बडो, क्रोधी लोभी मानु ॥१२४॥
सू.चं.बु.बृ.शु.श. रवि शशि बुध गुरु शुक्र शनि,जो इकठौरे होय।
बौना निद्रा छिमा जुत, मंत्र कलत्री सोय ॥ १२५ ॥
सू.मं.बु.बृ.शु.श. रवि मंगर बुध जीव भृगु,शनि संगम इक धाम।
धन दारा सुत हीन है, तीरथ गमन सुकाम ॥ १२६ ॥
चं.मं.बु.बृ.शु.श. शशि मंगर बुध जीव भृगु,शनि संग जानों युक्त
धनी पुत्र सुभशील गुन, नृपति भार्या जुक्त ॥ १२७ ॥
इति श्रीजोतिषचंद्रिका श्रीवैष्णव रामगुलाम पराशरकृत

चतुर्थोऽध्याय ४ समाप्तः

अथ जन्मसम्वतसर फ़लानि

प्रभव जन्म नर संग्रही, संतति युक्त सभोग ।
दीर्घ आयुसो जानिये, बुद्धिमान बड़योग ॥ १ ॥
विभव सर्व प्रिय जानिये, वली चतुर गुण युक्त ।
कुलदीपक विद्यानिधी, सर्व भोग कर भुक्त ॥ २ ॥

शुक्लजन्म आनंदयुत, होवे परम उदार ।
सुतदारा उत्तम लहै, अति वैभव विस्तार ॥ ३ ॥
प्रमोदाब्द दाता बडो, सतवक्ता गुणवान ।
चतुर धूर्त अभिमान युत, अति प्रिय सो नर जान ॥ ४ ॥
प्रजाधीश नर जन्मही, जानै सब कुल रीति ।
देव विप्र पूजन करै, निज नारी पर प्रीति ॥ ५ ॥
अंगिराब्द प्रिय सर्वको, अति मानी मृदु वैन ।
दीर्घायू पुत्रन सहित, करै सदा सुख चैन ॥ ६ ॥
श्रीमुख परम उदार सो, परतापी श्रीमान ।
शास्त्रज्ञ अरु सुहृद प्रिय, बुद्धिमान बलवान ॥ ७ ॥
भाव सर्व प्रिय हंसमुख, गुणी यशस्वी जान ।
स्तुति योग्य बखानिये, करै निरंतर दान ॥ ८ ॥
युवा गुणी अति नम्र नर, दान निरत बुधिमान ।
प्रकृती शांत उदारचित, दीर्घायू बलवान ॥ ९ ॥
धाता कारीगर चतुर, अरु गुण गौरव जक्त ।
रूपमान सुंदर बहुत, नर सुशील गुरुभक्त ॥ १० ॥
ईश्वराब्द नर जन्मही, क्रोध हर्ष संयुक्त ।
गुणी प्रतापी चतुर नर, कला कुशलता युक्त ॥ ११ ॥
बहुधान्य नर जन्मही, राजासे सनमान ।
व्योपारी शास्त्रज्ञ बहु, करै दान अभिमान ॥ १२ ॥
प्रमाथी नर चतुर बहु, घोडे रथ ध्वज छत्र ।

शास्त्रज्ञ नरपति सचिव, शत्रु हनन एकत्र ॥ १३ ॥
विक्रम उग्र कर्म कर, शत्रु हननमें धीर।
पराक्रमी बहु जानिए, अति उदार हो बीर ॥ १४ ॥
बृष संवत नर जन्मही, निज कृत करत बखान।
निंदित प्रकृति दुष्ट संग, मलिन आलसी जान ॥ १५ ॥
चित्रभानु शौकीन अति, वस्त्र पुष्प प्रिय जान।
कला कुशल उत्तम प्रकृति, सर्व बस्तु ग्रह आन ॥ १६ ॥
सुभानु सम्वत जन्म नर, घूंघरवाले केश।
दिव्य कान्ति युत सरल बहु, बुद्धिमान शुभ भेश ॥ १७ ॥
तारण निरधन जानिये, निंदित निठुर निःशंक।
धूर्त चपल अरु शूर नर, कला कुशल मन रंक ॥ १८ ॥
पार्थिव कला कुशल नर, धर्मकर्मरत होय।
पारंगत षट शास्त्रमें, परम विलासी सोय ॥ १९ ॥
व्यय संवत नर जन्मही, मन मोदक नित खाय।
दुखी भयातुर चपल चित, ऋणिया सदा रहाय ॥ २० ॥
सर्वजित पावित्र नर, राज सभा सनमान।
शत्रुजीत अति सुदृढ तन, भूमिपाल वह जान ॥ २१ ॥
सर्वधारी संवत जनम, बहु सेवक बहु भोग।
सुंदर मिष्ठ अन्न रुचि, परम धीर गुण योग ॥ २२ ॥
विरोधी संवत् जन्म नर, कर प्रदेश में वासु।
कुटुंब रहित अरु धूर्त बड़, मित्र न कोई तासु ॥ २३ ॥

विकृति जन्म नर पावई, वह धन हीन बखान ।
गर्वी वद सूरत महा, मलिन बुद्धिकर जान ॥ २४ ॥
खर सम्वत निरलज्ज नर, धूसर रंग शरीर ।
अति कामी अरु क्लेश युत, बोलत वचन अहीर ॥ २५ ॥
नंदन सदा प्रसन्न नर, नारिन देइ अनंद ।
सर वापी ग्रह कूप रचि, अन्न दान स्वच्छंद ॥ २६ ॥
विजय वीर बड जानिये, राजपूज्य अरु धीर ।
दाता दयानिधानसो, शत्रुन करै अधीर ॥ २७ ॥
जय सम्वत नर जन्मही, सतवक्ता विद्वान ।
शास्त्रार्थ कर विज्ञसन, जय अभिलाषी जान ॥ २८ ॥
मनमथ त्रियन विलास युत, भूषित भूषण अंग ।
परम मृदुल भाषण करत, गीत नृत्य मिरदंग ॥ २९ ॥
दुरमुख टेढा अंग सब, बुद्धिहीन अरु क्रूर ।
पापी लोभी दुष्ट अति, निंद कर्म रह चूर ॥ ३० ॥
हेमलंब धनवस्त्रबहु, अस्व हेम अरु रत्न ।
सुत दारा सुख भोगई, वस्तु ग्रहण कर यत्न ॥ ३१ ॥
विलंबाब्दनर जन्मही, बकवादी कफ रोग ।
धूरत लोभी आलसी, धैर्यरहित बड़ योग ॥ ३२ ॥
विकारी संबत जन्म नर, चंचलबुद्धि बखान ।
वहुभाषी अरु धूर्त सो, सुहृद अहितकर जान ॥ ३३ ॥
शार्वरी चातुर वहुत, वणिक क्रियामें पूर ।

सुहृद सुखद नर जानिये, रह विलासमें चूर ॥ ३४ ॥
प्लुव सम्बत नर जन्महीं, बहु कामी धनवान ।
भृत्य कर्म चंचल प्रकृति, गुप्त बुद्धिकर जान ॥ ३५ ॥
शुभकृत पुण्यवान नर, विद्या विनय विवेक ।
सुख सुत संपति आयु बड़, राखै निज प्रण टेक ॥ ३६ ॥
शोभकृत जन्मत पुरुष, ऊचा सुघर दयाल ।
गुण सतकर्मी सर्वप्रिय, चतुर नम्र भल चाल ॥ ३७ ॥
क्रोधी जन्मै क्रूर नर, तियाप्रिय थोंद विशाल ।
परकारज में छिप रहै, क्रोध नेत्र कछु लाल ॥ ३८ ॥
विस्वावसु नर जन्महीं, सुत दारा युत जान ।
अतिउदार साचार रत, मिष्टअन्न कर पान ॥ ३९ ॥
पराभवाब्द शठ जन्महीं, कटुवादी क्रियहीन ।
धान्य धन संग्रह रहित, रहै सदा अति दीन ॥ ४० ॥
प्लुवंगाब्द दृढ चित्त नर, दुवला जिस्का अंग ।
सदाचार शुभकाज नहिं, धूर्तराज दुर संग ॥ ४१ ॥
किलक शत्रु नाशक कहो, मध्यम छवि प्रियवैन ।
अति दयालु नर जानिए, जल पीवै दिल चैन ॥ ४२ ॥
सौम्य नाम संवत् जनम, भोगी धनी कहाय ।
कृश शरीर पंडित चतुर, आतिथि पूज चित लाय ॥ ४३ ॥
साधारण संवत जनम, लेखक चतुर बखान ।
ज्ञान क्रोध वैराग्ययुत, इत उत डोलत बान ॥ ४४ ॥

बिरोधकृत नर जन्मही, सर्व विरोधी जान ।
शिवभक्ती तिहिउर वसै, अवगुण होए महान ॥ ४५ ॥
परिधावी संवत् जनम, विद्यावान सुशील ।
गान वाद्य परवीण नर, राजमान्य शुभ डील ॥ ४६ ॥
प्रमादी संवत जन्म नर, दुष्ट घमंडी जानि ।
कलही लोभी दीन अति, मंद बुद्धि निंद खानि ॥ ४७ ॥
आनंद सम्वत उपज नर, वहु त्रियगामी होय ।
चतुर कुशल दाता बड़ो, नम्र सत्य कह सोय ॥ ४८ ॥
राक्षस क्रूर कलह प्रिय, दयारहित नर जान ।
विना बिचारे काम कर, धर्म कर्म चुत मान ॥ ४९ ॥
अनल चपलता युक्त नर, खेतिहर उत्तम बुद्धि ।
वैश्यचाकरीमें चतुर, लघुधन पाल सुहृद्धि ॥ ५० ॥
पिंगल पीले नेत्र नर, निंद्य कर्म रत जानु ।
उद्धत चंचल वैभवी, कटुवादी शठ मानु ॥ ५१ ॥
काल युक्त संवत जनम, कृश शरीर नर होय ।
बहुवादी पर सर्व प्रिय, दुष्टबुद्धि है सोय ॥ ५२ ॥
सिद्धार्थी धनवान नर, राज्य मंत्रि बहु पूज ।
समर यशस्वी सुघर तन, मन उदार वड़ भूज ॥ ५३ ॥
रौद्रनाम संवत जनम, निंदक दुष्ट प्रकृत्ति ।
बड़ा भयंकर धूर्त नर, पशु पालन कर वृत्ति ॥ ५४ ॥
दुर्मति जिद्दी दुरमती, बात पक्ष अभिमान ।

बहु कामी अप्रसन्न रहि, दुष्ट कर्म रत जान ॥ ५५ ॥
दुंदुभि संवत जन्म नर, राजा करैं प्रतीति ।
अस्व हेम गज युक्त सो, गानवाद्यमें प्रीति ॥ ५६ ॥
रुधिरोद्गारि उपज नर, शस्त्र चोट दुख पाय ।
रक्त नैन रोगी कृशी, नखटेंढ़े हों ताय ॥ ५७ ॥
रक्ताक्षि संवत् जनम, नेत्ररोग नर होय ।
परसम्पति देखे जरै, कामी धर्म्मी सोय ॥ ५८ ॥
क्रोधन विघ्नरूप नर, तमोगुणी सो होय ।
परकारज नासै सदा, महा भयंकर सोय ॥ ५९ ॥
क्षय संवत् अलपज्ञ नर, निठुर चित्तकी वृत्ति ।
धन खोवै चाकर बनै, तिहिकी दुष्ट प्रकृत्ति ॥ ६० ॥

अथ । अयन । फलम् ।

उत्तरायण नर जन्मही, दारा सुत संतोष ।
दीर्घायु परसन्न चित्त, धैर्यचार कर कोष ॥ ६१ ॥
दक्षिणायन जो जन्मही, खेत कर्म रत जान ।
पशु पालै अभिमान युत, अति कठोर शठमान ॥ ६२ ॥

अथ ऋतुफलम्

सुंदर दीरघ छुधा बहु , काम जुक्त वह होय ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, शिशिर जन्म जो कोय ॥ ६३ ॥
महाधनी कार्जी बड़ो, जसीमान सुररूप ।
रितु बसंत अब जानिये, जो जन्में नर भूप ॥ ६४ ॥

राज पूज गुन ज्ञान बहु, रोगी बहुत सुजान।
ग्रीष्म ऋतु अब जन्महीं, जोधा क्रिया बषानु ॥ ६५ ॥
बुद्धिमान दीरघ सबल, भोगी वादी होय।
पावस रितु नर जन्मही, तिहि कर फल ऐसोय ॥ ६६ ॥
वणिज कृषी धन मान जुत, भय मानै सब कोय।
यह जानौ रितु शरदमें, भाग्यवंत नर होय ॥ ६७ ॥
बहु कामी हिरसी बडो, बादी सो अधिकाइ।
जन्म लेइ हेमंत ऋतु, लक्षण हीन बताइ ॥ ६८ ॥

अथ मासजन्मफलम्।

बुद्धिमान पापी बड़ो, चित्त दुक्ख बहु होय।
कार्तिकमासे जन्मही, तिहिकर फल ऐसोय ॥
सत्य वचन परमातमा, परकार्जी धनमान।
मित्र बहुत तिहि जानिये, अगहन जन्म बषानु ॥ ७० ॥
शूरबीर उपकारिया, पंडित चतुर प्रवीन।
इन्द्रीजित नर होय सो, पूस जन्म जिहि लीन ॥ ७१ ॥
उपकारी थिर निठुर बहु, शत्रुन बहुत सताय।
माघ मास जो जन्मही, सो फल दयो बताय ॥ ७२ ॥
कुलदीपक परकार्जी, विद्या बहुत बताय।
फागुन मास जु जन्मही, नर परदेश वसाय ॥ ७३ ॥
इन्द्रीजीत दयालु सो, मीठो भोजन भाइ।
चैत्रमास नर जन्मही, बहु सुख ताहि बताइ ॥ ७४ ॥

भोगी सुंदर नैनमृग, कामी रिस बहु होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, वैसाषै सुख सोय ॥ ७५ ॥
शुभ मंत्री परदेश रहि, दीरघ तन बहु जोय।
जेष्ठमास नर जन्महीं, तिहि कर असफल होय ॥ ७६ ॥
सत्य वचनपर मोह बहु, सुंदर सुखी बषानु।
आसाढ़े नर जन्महीं, तिहको यह फल मानु ॥ ७७ ॥
पुत्रमान परिवार जुत, क्रियामान सज्ञान।
श्रावन जो नर जन्महीं, कुलदीपक सो जानु ॥ ७८ ॥
लाभ हानि दुख सुख बहुत, दीरघ मोटो होय।
वैष्णव रामगुलाम कहि, भादौं जन्मैं सोय ॥ ७९ ॥
क्रियामान सुंदर ललित, बड़ो भक्त नर होय।
आश्विनमें नर जन्महीं, ताको सुख शुभ सोय ॥ ८० ॥

अथ मलमास जन्म फलम्।

विषयरहित सुंदर चरित, जो जन्मैं मलमास।
तीर्थ निरोगी सर्व प्रिय, निजहित जानै खास ॥ ८१ ॥

अथ पक्ष जन्म फलम्।

स्त्री दोषी दुरमुखी, मूरख श्यामल अंग।
कृष्णपक्ष नर जन्महीं किंतु होय सुख संग ॥ ८२ ॥
रूपमान पंडित चतुर, और शीलव्रत होय।
शुक्लपक्ष नर जन्महीं, तिहकर फल ऐसोय ॥ ८३ ॥

अथ दिनरात्रिफलम् ।

दिन जन्मैं नर तेजसी, पितु गुण रूप समान।
भाई बंधु अरु राज्य प्रिय, अति धनमान वखान ॥ ८४ ॥
रैनि जन्म क्षयरोग युत, मंदद्दष्टि वहु काम ।
मैला क्रूर स्वभाव अरु, गुप्त पापकर धाम ॥ ८५ ॥

अथतिथि जन्म फलम् ।

क्रूर संग ब्रत हीन है, कुल संतापी होय।
परि वा तिथि नर जन्म ही, तिहकर फल ऐसोय ॥ ८६ ॥
पर दारा जो रति सदा, तस्कर हीन वताइ ।
दुतिया तिथि नर जन्म ही, तिहि फल जानो भाइ ॥ ८७ ॥
द्रव्य हीनपर दोष नित, मूरष मूढ़ वषानु ।
त्रितिया तिथि नर जन्मही, जिह कर यह फल मानु ॥ ८८ ॥
वहुभोगी दाता चतुर, धन संताने युक्त ।
अव जानौ तिथि चौथ को, जो जन्में हरि भक्त ॥ ८९ ॥
क्रिय सुंदर गुनमान वहु, मित्र मित्र सत्रु पाइ ।
पंचिम तिथि नर जन्म ही, दाता भक्त वताइ ॥ ९० ॥
कलह वड़ो परदेश भ्रम, जड़ दोषी नरमानु ।
अव जानौ नर जन्म ही, षष्टी तिथि पहिचानु ॥ ९१ ॥
भागवान सुंदर निपुण, पुत्रमान धनमान ।
बैष्णव रामगुलाम कहि, जन्म सप्तमी जान ॥ ९२ ॥
धर्म इष्ट गुनमान वहु, चातुर शूर सुजान ।

परात्रमी नर जानिये, जन्म अष्टमी मान ॥ ९३ ॥
पुत्रमान धनमान नर, देव सुभाव बताइ ।
पंडित कवि धन मान सो, नौमी जन्म जो पाइ ॥ ९४ ॥
धर्म कर्म सुत देव गति, पंडित धनी बषानु ।
अब जानौ दशमी जन्म, तिहि कर फल यह जानु ॥ ९५ ॥
एकादशि नर जन्म ही, धर्म विवेकी होय ।
दयावान गुण ज्ञान शुचि, भागवान है सोय ॥ ९६ ॥
ज्ञानमान अरु चपल बहु, रूपमान सुखधाम ।
द्वादश तिथि नर जन्म ही, कवि पंडित शुभ काम ॥ ९७ ॥
महा सिद्धि पंडित कहो, पर कार्जी नर होय ।
तेरस तिथि नर जन्म ही, तिहि जानौ सब कोय ॥ ९८ ॥
धर्म शील धरमात्मा, कुटुंब सकल प्रतिपाल ।
नर जानौ चौदस तिथि, चतुर मिलै नृप बाल ॥ ९९ ॥
पर दारा जो रति करै, लोभी ललची होय ।
अब जानौ पूनौ जन्म, सुत उपजै जो कोय ॥ १०० ॥
पराक्रमी मंत्री चतुर, बुद्धिमान नर जानु ।
तिथि आमावस फल कहो, सो निहचे करि मानु ॥ १०१ ॥

अथतिथि भेद फलं ।

नंदा तिथि जो जन्म ही, पंडित भक्त सु भेय ।
नर जानौ ज्ञानी बड़ो, सदा संत की सेय ॥ १०२ ॥
भद्रा तिथि जो जन्म ही, धनवंतो नर होय ।

बुद्धिमान परमार्थी, अब जानौ सुत सोय ॥ १०३ ॥
तिथी जया नृप मान ही, पुत्र मान नर जानु ।
सत्य वचन दीरघ कहो, वहु सुत तो गुनमान ॥ १०४ ॥
रिक्ता तिथि वृत हीन है, गुरु निंदक वादीच ।
अरु जानौ कामी बड़ो, संगति करि है नीच ॥ १०५ ॥
पूर्णा तिथि धन वान नर, पंडित चतुर सुशील ।
नर जानौ सुंदर ललित, दीरघ भुजा सुडील ॥ १०६ ॥

अथ वार फलं

मानी क्रोधी भोग जुत, नर लालची बषानु ।
रवि वासर नर जन्म ही, धन कामी वहु जानु ॥ १०७ ॥
प्रथम मास दुतिया त्रिती, चौथे दशये जानु ।
षष्टे और जो जानिये, पीड़ा मास वषानु ॥ १०८ ॥
जोग मान धनमान है, विद्या शील सुजान ।
सोम्वार अव जानिये, पंडित कवि सज्ञान ॥ १०९ ॥
षष्ट मास एकादशे, षोडस मास बताय ।
सात वर्ष वा बीसवें, पीड़ा अधिक सताय ॥ ११० ॥
हर्ष क्रूर पर निन्दका, बुद्धि हीन जह जानु ।
वैष्णव रामगुलाम कहि, मंगल जन्म बषानु ॥ १११ ॥
दूजी सतई बीसई, पीड़ा वर्ष वताय ।
मंगर वासर जानिये, रोगी सदा लषाइ ॥ ११२ ॥
वेद शास्त्र क्रियमान जुत, शोभा शील वताय ।

जोग जुगति सब जानई, बुध वासर नरु आय ॥ ११३ ॥
अष्ट मास इक वर्ष में, षष्टी वर्ष सो पाइ ।
वैष्णव रामगुलाम कहि पीड़ा अंग बताइ॥ ११४ ॥
वेद ज्ञान विज्ञान बहु, पुत्रमान धनमान ।
गुरुवासर अब जानिये, बृत पूरण सुर ध्यान ॥ ११५ ॥
अष्ट मास षोडस सते, षष्ठ बहुत तन हर्ष ।
अब जानो गुरुवारको, नर जीवै शत वर्ष ॥ ११६ ॥
धनमंतो बहु शूरमा, पुत्रमान बड होय ।
देवपूज्य नर जानिये, शुक्रवारको जोय ॥ ११७ ॥
तन सुंदर पीड़ा रहित, रोग शरीर न होय ।
अरु जानौ षटवर्षमें, उदै भाग्य कर सोय ॥ ११८ ॥
प्रथम काज रूखो रहै कुटिल सो पापी अंग ।
शनिबासर अब जानिये, दुष्ट क्रिया परसंग ॥ ११९ ॥
प्रथम मास पीड़ा कही, वर्ष आठई मानु ।
वैष्णव रामगुलाम सौ, वर्ष जिये परमानु ॥ १२० ॥

इति श्रीज्योतिष चन्द्रिका श्रीवैष्णव रामगुलाम पराशरकृत पंचमोध्याय ५ समाप्तः ।

अथ नक्षत्र जन्म फलम्—

भाग्यमान तन शूरमा, धनमंतो बहु होय ।
वैष्णव रामगुलाम फल, अश्वनि नखत कहोय ॥ १ ॥